आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 07-04-2016 ● अंक-487 ● तारीख - 08 अप्रैल 2016, चैत्र शुक्ल - 1 ● शुक्रवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

श्री सत्यसांई -अनमोल वचन

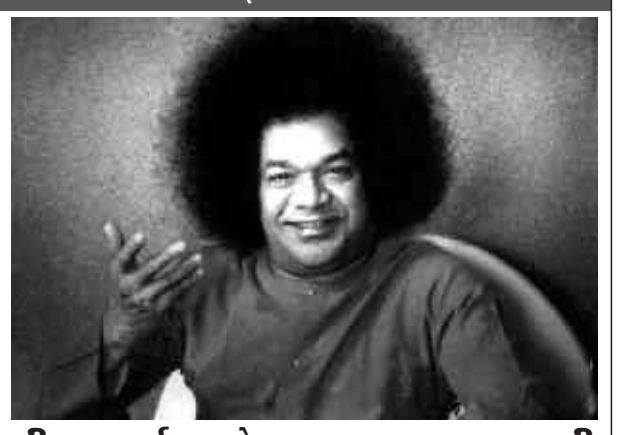

श्री सत्य साई एजुकेअर : हृदय ताला व मन चाबी

हृदय ताला है और मन चाबी है

संसार की ओर मनको मोड़ना ही ताला बन्द करना है। ईश्वर की ओर मन को मोड़ना ही ताला खोलना है। जब तुम मन को संसार की ओर मोड़ लेते हो तो तुम स्वयं को बंधन में डाल देते हो। जब तुम मन को ईश्वर की ओर मोड़ लेते हो तो मुक्त हो जाते हो।

–श्री सत्य साई बाबा

नीति के दोहे

भयउ कौसिलहि बिधि अति दाहिन।
देखत गरब रहत उर नाहिन।
देखहु कस न जाइ सब सोभा।
जो अवलोकि मोर मनु छोभा।।

भावार्थ–आज कौसल्या को विधाता बहुत ही दाहिने (अनुकूल) हुए हैं, यह देखकर उनके हृदय में गर्व समाता नहीं। तुम स्वयं जाकर सब शोभा क्यों नहीं देख लेतीं, जिसे देखकर मेरे मन में क्षोभ हुआ है।

पूतु बिदेस न सोचु तुम्हारें।
जानति हहु बस नाहु हमारें।
नीद बहुत प्रिय सेज तुराई।
लखहु न भूप कपट चतुराई।।

भावार्थ–तुम्हारा पुत्र परदेस में है, तुम्हें कुछ सोच नहीं। जानती हो कि स्वामी हमारे वश में हैं। तुम्हें तो तोशक–पलँग पर पडे–पडे नींद लेना ही बहुत प्यारा लगता है, राजा की कपटभरी चतुराई तुम नहीं देखतीं।

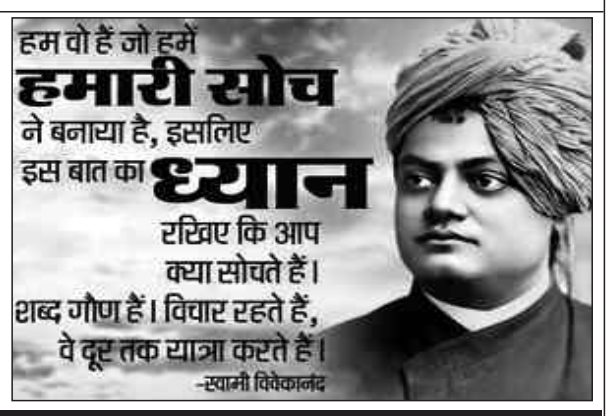

श्रद्धा गीत

सत्य वही चिड़िया कहा, गाए श्रद्धा गीत।
डाल–डाल पर फुदकती, पात–पात से प्रीत ।।

भावार्थ –सत्यरूपी चहकती चिड़िया जो हमेशा श्रद्धा के ही गीत गाती है। जो हर डाल पर फुदकती हुई, पात–पात से प्यार की डोर बाँधती हुई फुर्र–फुर्र उड़ती हुई नज़र आती है।

अमृत वचन – सत्यरूपी चिड़िया हमेशा श्रद्धा के ही गीत गाती है।

अब बिना कार्ड व बैंक खाता के बाद भी ए.टी.एम. से निकाल सकेंगे रुपये

बैंक उपभोक्ताओं के लिए एक बहुत ही बड़ी खुशखबरी है। अब एटीएम से रुपए निकालने के लिए अब आपको कार्ड और खाते की जरूरत नहीं होगी।

रिजर्व बैं के गवर्नर रघुराम राजन के अनुसार इस योजना में जो बैंक शामिल होंगे उनके खाताधारक किसी ऐसे व्यक्ति को भी पैसा भेज सकते हैं, जिनके पास कोई बैंक खाता न हो। राजन ने कहा कि देश में अब भी बहुत से ऐसे लोग हैं जिनके पास कोई बैंक खाता नहीं है। लेकिन उन्हें उनके रिश्तेदार या अन्य निकट संबंधी पैसे भेजते हैं।

अब सिर्फ एक कोड की सहायता से ही एटीएम से पैसे निकाले जा सकेंगे। इस सुविधा में सुरक्षा कारणों को भी ध्यान में रखा गया है जिसके तहत ग्राहक–पहचान भी की जाएगी। यह सुविधा दूर–दराज में रहने वाले दोस्तों और रिश्तेदारों के लिए काफी लाभकारी होगी जिनका कोई बैंक अकाउंट नहीं है।

राजन ने बताया कि आरबीआई ने इस योजना को हाल ही में मंजूरी दे दी है। इसमें खाताधारक के अनुरोध पर बैंक लाभार्थी के मोबाइल पर एक कोड भेज देगा। लाभार्थी उस बैंक के किसी भी एटीएम पर जाकर इस कोड की मदद से बिना एटीएम कार्ड के पैसे निकाल सकेगा।

राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान

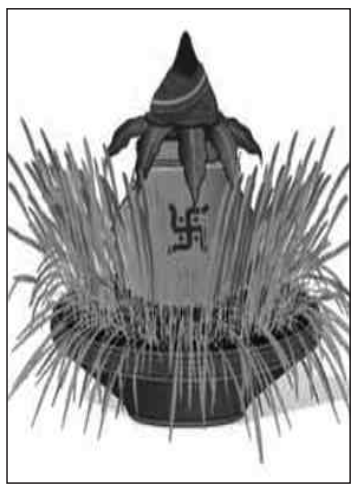

पिछले दो हजार वर्षों में अनेक देशी और विदेशी राजाओं ने अपनी साम्राज्यवादी आकांक्षाओं की तुष्टि करने तथा इस देश को राजनीतिक दृष्टि से पराधीन बनाने के प्रयोजन से अनेक संवतों को चलाया किंतु भारत राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान केवल विक्रमी संवत के साथ ही जुड़ी रही। अंग्रेजी शिक्षा–दीक्षा और पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव के कारण आज भले ही सर्वत्र ईस्वी संवत का बोलबाला हो और भारतीय तिथि–मासों की काल गणना से लोग अनभिज्ञ होते जा रहे हों परंतु वास्तविकता यह भी है कि देश के सांस्कृतिक पर्व–उत्सव तथा राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, गुरु नानक आदि महापुरुषों की जयंतियाँ आज भी भारतीय काल गणना के हिसाब से ही मनाई जाती हैं, ईस्वी संवत के अनुसार नहीं। विवाह–मुण्डन का शुभ मुहूर्त हो या श्राद्ध–तर्पण आदि सामाजिक कार्यों का अनुष्ठान, ये सब भारतीय पंचांग पद्धति के अनुसार ही किया जाता है, ईस्वी सन् की तिथियों के अनुसार नहीं।

राष्ट्रीय संवत

भारतवर्ष में इस समय देशी विदेशी मूल के अनेक संवतों का प्रचलन है किंतु भारत के सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से सर्वाधिक लोकप्रिय राष्ट्रीय संवत यदि कोई है तो वह विक्रम संवत ही है। आज से लगभग 2,068 वर्ष यानी 57 ईसा पूर्व में भारतवर्ष के प्रतापी राजा विक्रमादित्य ने देशवासियों को शकों के अत्याचारी शासन से मुक्त किया था। उसी विजय की स्मृति में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि से विक्रम संवत का भी आरम्भ हुआ था। प्राचीनकाल में नया संवत चलाने से पहले विजयी राजा को अपने राज्य में रहने वाले सभी लोगों को ऋण–मुक्त करना आवश्यक होता था। राजा विक्रमादित्य ने भी इसी परम्परा का पालन करते हुए अपने राज्य में रहने वाले सभी नागरिकों का राज्यकोष से कर्ज चुकाया और उसके बाद चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से मालवगण के नाम से नया संवत चलाया। भारतीय कालगणना के अनुसार वसंत ऋतु और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि अति प्राचीनकाल से सृष्टि प्रक्रिया की भी पुण्य तिथि रही है। वसंत ऋतु में आने वाले वासंतिक नवरात्र का प्रारम्भ भी सदा इसी पुण्यतिथि से होता है। विक्रमादित्य ने भारत राष्ट्र की इन तमाम कालगणनापरक सांस्कृतिक परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए ही चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि से ही अपने नवसंवत्सर संवत को चलाने की परम्परा शुरू की थी और तभी से समूचा भारत राष्ट्र इस पुण्य तिथि का प्रतिवर्ष अभिवंदन करता है। दरअसल, भारतीय परम्परा में चक्रवर्ती राजा विक्रमादित्य शौर्य, पराक्रम तथा प्रजाहितैषी कार्यों के लिए प्रसिद्ध माने जाते हैं। उन्होंने 95 शक राजाओं को पराजित करके भारत को विदेशी राजाओं की दासता से मुक्त किया था। राजा विक्रमादित्य के पास एक ऐसी शक्तिशाली विशाल सेना थी जिससे विदेशी आक्रमणकारी सदा भयभीत रहते थे। ज्ञान–विज्ञान, साहित्य, कला संस्कृति को विक्रमादित्य ने विशेष प्रोत्साहन दिया था। धंनवंतरि जैसे महान वैद्य, वराहमिहिर जैसे महान ज्योतिषी और कालिदास जैसे महान साहित्यकार विक्रमादित्य की राज्यसभा के नवरत्नों में शोभा पाते थे। प्रजावत्सल नीतियों के फलस्वरूप ही विक्रमादित्य ने अपने राज्यकोष से धन देकर दीन दुरूखियों को साहूकारों के कर्ज से मुक्त किया था। एक चक्रवर्ती सम्राट होने के बाद भी विक्रमादित्य राजसी ऐश्वर्य भोग को त्यागकर भूमि पर शयन करते थे। वे अपने सुख के लिए राज्यकोष से धन नहीं लेते थे।

नव संवत्सर

विक्रम संवत 2073 का शुभारम्भ चैत्र मास के शुक्ल पक्ष, अश्विनी नक्षत्र से है। पुराणों के अनुसार इसी तिथि से ब्रह्मा जी ने सृष्टि निर्माण किया था, इसलिए इस पावन तिथि को नव संवत्सर पर्व के रूप में भी मनाया जाता है। संवत्सर–चक्र के अनुसार सूर्य इस ऋतु में अपने राशि–चक्र की प्रथम राशि मेष में प्रवेश करता है। भारतवर्ष में वसंत ऋतु के अवसर पर नूतन वर्ष का आरम्भ मानना इसलिए भी हर्षोल्लासपूर्ण है क्योंकि इस ऋतु में चारों ओर हरियाली रहती है तथा नवीन पत्र–पुष्पों द्वारा प्रकृति का नव श्रृंगार किया जाता है। लोग नववर्ष का स्वागत करने के लिए अपने घर–द्वार सजाते हैं तथा नवीन वस्त्राभूषण धारण करके ज्योतिषाचार्य द्वारा नूतन वर्ष का संवत्सर फल सुनते हैं। शास्त्रीय मान्यता के अनुसार चौत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि के दिन प्रातरू काल स्नान आदि के द्वारा शुद्ध होकर हाथ में गंध, अक्षत, पुष्प और जल लेकर ओम भूर्भुवरू स्वरू संवत्सर–अधिपति आवाहयामि पूजयामि च इस मंत्र से नव संवत्सर की पूजा करनी चाहिए तथा नववर्ष के अशुभ फलों के निवारण हेतु ब्रह्मा जी से प्रार्थना करनी चाहिए कि 'हे भगवन! आपकी कृपा से मेरा यह वर्ष कल्याणकारी हो और इस संवत्सर के मध्य में आने वाले सभी अनिष्ट और विघ्न शांत हो जाएं।' नव संवत्सर के दिन नीम के कोमल पत्तों और ऋतुकाल के पुष्पों का चूर्ण बनाकर उसमें काली मिर्च, नमक, हींग, जीरा, मिश्री, इमली और अजवायन मिलाकर खाने से रक्त विकार आदि शारीरिक रोग शांत रहते हैं और पूरे वर्ष स्वास्थ्य ठीक रहता है।

मानव मन के बोल

समानता के भाव

गतांक से आगे.....

काकभुशुण्ड जी अमर हुए, अमर हुए मार्कण्डेय ऋषि, अमर हुए अश्वत्थामा, अश्वत्थामा अमर होकर के भी व्याकुल है। क्योंकि उन्होंने द्रौपदी के पांच पुत्रों की हत्या सोते हुए कर दी थी। पाप किया था। और जब उस हत्यारे को पकड़कर के भीम सेन और अर्जुन लेकर के आये थे। द्रौपदी ने कहा इनका वध मत कीजिये। इसकी माँ को में पीड़ा नहीं पहुँचाना चाहती हूँ। मुझे मालूम है कि बेटे के देहान्त पर कितना दुःख माँ को होता है। मैंने वो दुःख पाया है। इसलिये इनको छोड़ दीजिये। उनकी मणि निकाल ली थी। फिर भी दुष्ट की दुष्टता नहीं मिटी। उत्तरा अभिमन्यु की पत्नी चिल्लाई कृष्ण, कृष्ण, कृष्ण, केशव, माधव दौड़ो–दौड़ो मेरा पेट जला जा रहा है। कोई ऐसा है जो मेरे पेट में अग्नि प्रवेश कर रहा है। उस समय अश्वत्थामा ने ब्रह्म अस्त्र का संधान किया था। और ऋषि महर्षियों ने कहा था मूर्ख लौटा दे ब्रह्म अस्त्र को लौटा दे, किसी का भ्रूण हत्या करना महा पाप है। अश्वत्थामा बोला मैं लौटा नहीं सकता। तो मूर्ख चलाया ही क्यों? जिसे आप लौटा नहीं सकते। जिस अपमान वचन को आप लौटा नहीं सकते तो आपको किसी का अपमान करने का अधिकार क्या है? ऋषियों ने कहा था लौटा नहीं सकता तो दिशा को मोड़ दे। बोला दिशा को भी नहीं मोड़ सकता। तो तूं व्याकुल होकर जिन्दगी भर भटकेगा ना मर पायेगा ना जी पायेगा। ऐसी जिन्दगी क्या काम की?मेरी माता जी ने मुझे एक बार कहा। जब मैं पाली मारवाड़ में था 1974 की बात थी। कैलाश एक आदमी ने कहा भगवान आप सब की भूख बन्द कर दो यही वरदान सब को दे दो। अरे लाल भूख तो होनी चाहिये। भूख होगी तो आदमी काम भी करेगा। तो उसने बहुत कहा परमात्मा भूख बन्द कर दो, तो भगवान ने कहा तथास्तु और सब को भूख लगना बन्द हो गई। अब कोई सफाई नहीं करे। कोई पानी पीने के लिये कुआं नहीं खोदे। पानी वाले पानी का टेंकर ना लावे। चारों तरफ गन्दगी फैल गई।

क्रमश अगले अंक में ...

चैत्र नवरात्री

भारतीय नववर्ष का ऐतिहासिक महत्व :

1. यह दिन सृष्टि रचना का पहला दिन है। इस दिन से एक अरब 97 करोड़ 39 लाख 49 हजार 110 वर्ष पूर्व इसी दिन के सूर्योदय से ब्रह्माजी ने जगत की रचना प्रारंभ की।

2. विक्रमी संवत का पहला दिनः उसी राजा के नाम पर संवत् प्रारंभ होता था जिसके राज्य में न कोई चोर हो, न अपराधी हो, और न ही कोई भिखारी हो। साथ ही राजा चक्रवर्ती सम्राट भी हो। सम्राट विक्रमादित्य ने 2068 वर्ष पहले इसी दिन राज्य स्थापित किया था।

3. प्रभु श्री राम का राज्याभिषेक दिवसः प्रभु राम ने भी इसी दिन को लंका विजय के बाद अयोध्या में राज्याभिषेक के लिये चुना।

4. नवरात्र स्थापनाः शक्ति और भक्ति के नौ दिन अर्थात नवरात्र स्थापना का पहला दिन यही है। प्रभु राम के जन्मदिन रामनवमी से पूर्व नौ दिन उत्सव मनाने का प्रथम दिन।

5. गुरू अंगददेव प्रगटोत्सवरू सिख परंपरा के द्वितीय गुरू का जन्म दिवस।

6. समाज को श्रेष्ठ (आर्य) मार्ग पर ले जाने हेतु स्वामी दयानंद सरस्वती ने इसी दिन को आर्य समाज स्थापना दिवस के रूप में चुना।

7. संत झूलेलाल जन्म दिवसः सिंध प्रान्त के प्रसिद्ध समाज रक्षक वरूणावतार संत झूलेलाल इसी दिन प्रगट हुए।

8. शालिवाहन संवत्सर का प्रारंभ दिवसः विक्रमादित्य की भांति शालिनवाहन ने हूणों को परास्त कर दक्षिण भारत में श्रेष्ठतम राज्य स्थापित करने हेतु यही दिन चुना।

9. युगाब्द संवत्सर का प्रथम दिनः 5112 वर्ष पूर्व युधिष्ठिर का राज्यभिषेक भी इसी दिन हुआ।

भारतीय नववर्ष का प्राकृतिक महत्वः

1. वसंत ऋतु का आरंभ वर्ष प्रतिपदा से ही होता है जो उल्लास, उमंग,खुशी तथा चारों तरफ पुष्पों की सुगंधि से भरी होती है।

2. फसल पकने का प्रारंभ यानि किसान की मेहनत का फल मिलने का भी यही समय होता है।

3. नक्षत्र शुभ स्थिति में होते हैं अर्थात् किसी भी कार्य को प्रारंभ करने के लिये यह शुभ मुहूर्त होता हैं।

अतः हमारा नव वर्ष कई कारणों को समेटे हुए है , अंग्रेजी नववर्ष न मना कर भारतीय नववर्ष हर्षोउल्लास के साथ नववर्ष मनाये और दुसरो को भी मनाने के लिए प्रेरित करे।

सभी हिन्दू भाइयों, बहिनों और मित्रों से अनुरोध है, कि आप भी नवसंवत्सर, नवरात्रि और रामनवमी के इन मांगलिक अवसरों पर अपने अपने घरों को भगवा पताकाओं और आम के पत्तों की वंदनवार से जरूर सजाएँ।

उसे इंसान कहते हैं

किसी के काम जो आये, उसे इंसान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाए, उसे इंसान कहते हैं।।
कभी धनवान है कितना, कभी इन्सान निर्धन है।
कभी सुख है कभी दुःख है, इसी का नाम जीवन है।
जो मुश्किल में न घबराये, उसे इंसान कहते हैं।।
यह दुनिया एक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर।
कोई हँस-हँस के जीता है, कोई जीता है रो-रो कर।
जो गिर कर भी संभल जाए, उसे इन्सान कहते हैं।।
अगर ग़लती रुलाती है तो, यह राह भी दिखाती है।
व्यक्ति ग़लती का पुतला है, यह अक़्सर हो ही जाती है।
जो ग़लती करके पछताए, उसे इन्सान कहते हैं।।
अकेले ही खा-खाकर, सदा गुजरान करते हैं।
यों भरने को तो दुनिया में, पशु भी पेट भरते हैं।
पथिक जो बाँट कर खाये, उसे इन्सान कहते हैं।।

सम्पादकीय

आप स्वयं को आदर तभी दे पाएँगे, जब आप यह जान पाएँगे कि मैं कौन हूँ? 'मुझे अपने आपको जानना चाहिए तभी मैं खुश रह पाऊँगा वरना मेरा विकास कैसे होगा?' आप में स्वयं के प्रति आदर है तो आप जल्द से जल्द सत्य जानना चाहेंगे। स्वयं का आदर करना बहुत मुख्य बात है क्योंकि लोगों के साथ अच्छे व्यवहार की शुरूआत यहीं से होती है। स्वयं को आदर देने वाला इंसान गलतियों से बचने का रास्ता ढूँढ़ना चाहेगा। वह कभी नहीं चाहेगा कि उसकी आजादी छिन जाए। वह हर काम बिना गलती के करना चाहेगा।

इंसान जब पहले अपने आपको आदर देना सीखेगा तभी वह दूसरों को भी आदर दे पाएगा, लेकिन शुरूआत में ही उसका मूल अहंकार नहीं टूटेगा। शुरू में ही कोई अपने आपको नहीं जान सकता । स्वयं के प्रति आदर है तो शुरूआत कुछ अच्छी बातों को विकसित करने से होगी। जैसे– ' मुझे अच्छी शिक्षण पद्धति ग्रहण करनी चाहिए... मुझे सही लोगों के साथ उठना – बैठना चाहिए क्योंकि मैं अपने आपको दुनिया की बेहतरीन चीजें देना चाहता हूँ। मगर इसमें भी सूक्ष्मता है क्योंकि यहाँ आदर, अहंकार में बदलने की संभावना होती है। यदि दूसरों को आदर देते–देते सामने वाले ने आपको चोट पहुँचाई तो उसके प्रति नफरत शुरू होने की संभावना है, जो आदर के बिल्कुल विपरीत है। यह नफरत आपके अहंकार को चोट पहुँचने की वजह से उत्पन्न होगी। इसमें यह भी धोखा है कि अब आप चिढ़कर कहेंगे, 'आदर अभी बाजू में रखो, पहले उसे सबक सिखाया जाए।'

इस तरह कब आदर अहंकार में घुल–मिल जाता है आपको पता ही नहीं चलता। पहले जब कोई सुनता है कि अहंकार नहीं रखना चाहिए तो वह अपने प्रति आदर भी कम कर देता है। तब उसे कहा जाता है कि ' आदर कम मत करें, यह आगे सेल्फ रियलाइजेशन में काम आएगा। आप किसी से न कम हैं न ज्यादा हैं। आप जो भी है उसे आदर देना शुरू करें। स्वयं को आदर देते–देते आप सत्य के करीब पहुँच जाएँगे।' आदर ही घृणा और अहंकार को तोड़ने में मदद करता है। इसलिए सही ढ़ंग से अपने आपको आदर दें, यह आत्म सम्मान है, स्वयं का सच्चा सम्मान है।

कड़वे प्रवचन- मुनिश्री तरुणसागर जी

अगर आप बाप हैं तो आपका अपने बेटे के प्रति बस एक ही फर्ज है कि आप अपने बेटे को इतना योग्य बना दें कि वह संत–मुनि और विद्वानों की सभा में सबसे आगे की पंक्ति में बैठने का हकदार बनें और

अगर आप बेटे हैं तो आपका अपने बाप के प्रति बस यही एक कर्तव्य है कि आप ऐसा आदर्शमय जीवन जीएं जिसे देखकर दुनिया तुम्हारे बाप से पूछे कि किस तपस्या और पुण्य के फल से तुम्हे ऐसा होनहार–बेटा मिला है।

नारायण सेवा संस्थान के अन्तर्गत किये गये नियमित नि:शुल्क दिव्यांग ऑपरेशन की सूची

क्रं.स.	रोगी का नाम	पिता/पति का नाम	उम्र	लिंग	शहर	राज्य
1.	नीतिमा	विरेन्द्र चन्द्र	28	स्त्री	बांदा	उत्तरप्रदेश
2.	त्रिशा	दीपक	4	स्त्री	हरदा	मध्यप्रदेश
3.	कोमल	शोभाराम	4	पुरूष	बलोदाबाजार	छतीसगढ़
4.	कान्हा	हरेन्द्र	5	पुरूष	हाथरस	उत्तरप्रदेश
5.	गौराबी	संजीव	5	स्त्री	एटा	उत्तरप्रदेश
6.	शिवा	रज्जु	5	पुरूष	दमोह	मध्यप्रदेश
7.	दीपा	जीयालाल	5	स्त्री	बिलासपुर	छतीसगढ़
8.	सपना	अशोक	6	स्त्री	भिण्ड	मध्यप्रदेश
9.	मनीषा	देवीलाल	6	स्त्री	नीमच	मध्यप्रदेश
10.	बातुल	तालीब	7	स्त्री	राजगढ़	मध्यप्रदेश

क्रमशः

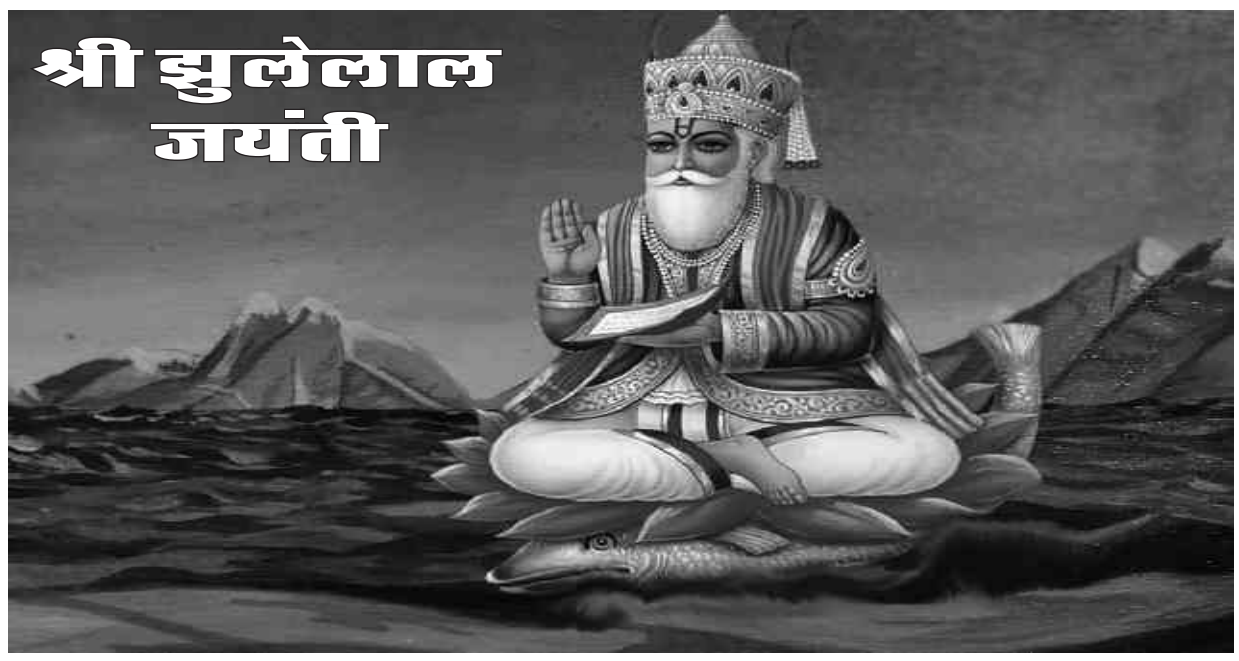

झूलेलाल को वेदों में वर्णित जल–देवता, वरुण देव का अवतार माना जाता है। वरुण देव को सागर के देवता, सत्य के रक्षक और दिव्य दृष्टि वाले देवता के रूप में सिंधी समाज भी पूजता है। उनका विश्वास है कि जल से सभी सुखों की प्राप्ति होती है और जल ही जीवन है। जल–ज्योति, वरुणावतार, झूलेलाल सिंधियों के ईष्ट देव हैं जिनके आगे दामन फैलाकर सिंधी यही मंगल कामना करते हैं कि सारे विश्व में सुख–शांति, अमन–चैन, कायम रहे और चारों दिशाओं में हरियाली और खुशहाली बने रहे। चैत्र मास की प्रथम किरण के उदय होते ही विक्रम संवत का शंखनाद हो उठता है और इसी शंखनाद के गुंजन से गूंजती है– एकता व भाईचारे की आवाज। यही आवाज न केवल सिंधी समुदाय को बल्कि समूचे राष्ट्र को एक नयी राह दिखलाती है। चंद्रमास की द्वितीय तिथि को सिंधी दिवस–'चेटीचण्ड' का महान् पर्व मनाया जाता है। पाकिस्तान के ठट्टा शहर में जहाँ झूलेलालजी ने जन्म लिया था, विस्थापन के बाद बिहार से गए याकूब भाई ने वहाँ कब्जा जमाया। संभवतः किसी अलौकिक चमत्कार को भाँपकर वे भी झूलेलालजी का मुरीद बन गया। तब से उसने व उसके परिजनों ने झूलेललाजी की अखंड ज्योति को आज भी कायम रखा है। यहाँ के वर्तमान रहवासियों की आस्था भी परवान पर है। कुछ विद्वानों के अनुसार सिंध का शासक मिरखशाह अपनी प्रजा पर अत्याचार करने लगा था जिसके कारण सिंधी समाज ने 40 दिनों तक कठिन जप, तप और साधना की। तब सिंधु नदी में से एक बहुत बड़े नर मत्स्य पर बैठे हुए भगवान झूलेलाल प्रकट हुए और कहा मैं 40 दिन बाद जन्म लेकर मिरखशाह के अत्याचारों से प्रजा को मुक्ति दिलाउंगा। चैत्र माह की द्वितीया को एक बालक ने जन्म लिया जिसका नाम उडेरोलाल रखा गया। अपने चमत्कारों के कारण बाद में उन्हें झूलेलाल, लालसांई, के नाम से सिंधी समाज और ख्वाजा खिज्र जिन्दह पीर के नाम से मुसलमान भी पूजने लगे। चेटीचंड के दिन श्रद्धालु बहिराणा साहिब बनाते हैं। शोभा यात्रा में 'छेज' (जो कि गुजरात के डांडिया की तरह लोकनृत्य होता है) के साथ झूलेलाल की महिमा के गीत गाते हैं। ताहिरी (मीठे चावल), छोले (उबले नमकीन चने) और शरबत का प्रसाद बांटा जाता है। शाम को बहिराणा साहिब का विसर्जन कर दिया जाता है। सिंधु नदी के किनारे जिंदपीर पर जहाँ झूलेलालजी ब्रम्हलीन हुए थे, वहाँ आज भी प्रतिवर्ष चालीस दिनों का मेला लगता है जिसे चालीहा कहा जाता है। इसी चालीहे के दौरान प्रत्येक सिंधी भाषी चाहे वह जहाँ भी हो, यथासंभव अपनी धार्मिक मर्यादाओं का पालन करता है।

भगवान झूलेलाल के अवतार–धारण की भी एक गाथा है। इतिहास में दर्ज है कि झूलेलालजी ने किसी भाषा या किसी धर्म की रक्षा के लिए नहीं, बल्कि संपूर्ण मानव समाज के उत्थान के लिए जन्म लिया था। मिरख बादशाह के जनता पर अत्याचार तो उसी दिन बंद हो गए थे, जिस दिन बादशाह ने स्वयं लालसाँईं की वाणी सुनी थी। तत्पश्चात लोगों में जल के प्रति आस्था बढ़ी और सिंधी भाषा में यह कहावत स्थापित हुई– श्जो बहू जल का महत्व नहीं समझे वह घी–मक्खन की कीमत भी नहीं समझेगी।श यही वजह है कि विश्व भर के तमाम दरवेशों, पीरों और मौलाओं में सर्वाधिक पूजे जाते हैं झूलेलालजी।

दमादम मस्त कलंदर... गीत को लोकप्रियता भले ही बांग्लादेश की गायिका रूना लैला द्वारा गाने के बाद मिली हो लेकिन सदियों से इस गीत के बोल झूलेलालजी की अर्चना में समर्पित किए जाते रहे हैं। संपूर्ण विश्व में संभवतः यह एकमात्र गीत ऐसा है, जिसे पचासों नामचीन गायकों ने अपनी–अपनी शैली में प्रस्तुत किया है। आबदा परवीन, अदनान सामी, साबरी ब्रदर्स, भगवंती नावाणी, लतिका सेन, विशाल–शेखर जैसे कई गायक इस कतार में हैं। चारई चराग तो दर बरन हमेशा, पंजवों माँ बारण आई आं भला झूलेलालण... अर्थात चारों दिशाओं में आपके दीप प्रज्वलित हैं। मैं पाँचवाँ चिराग लेकर आपके समक्ष हाजिर हूँ। माताउन जी जोलियूँ भरींदे न्याणियून जा कंदे भाग भला झूलेलालण... अर्थात हर माँ की आशाओं को पूरा करना और हर एक कन्या के भविष्य को सुनहरा बनाना। लाल मुहिंजी पत रखजंए भला झूलेलालण, सिंधुड़ीजा सेवण जा शखी शाहबाज कलंदर, दमादम मस्त कलंदर... अर्थात हे ईश्वर, मेरी लाज बचाए रखना, पीरों के पीर मैं सिर्फ आपके भरोसे हूँ। पूरे गीत का आशय यह है कि अपने पैदा किए हुए हर जीव को सुखी, संपन्न और शांति का जीवन देना ईश्वर।

इस गीत में सिंधी सभ्यता समाहित है। अपने जीवन के सरल बहाव के साथ–साथ परोपकार की भावना भी हर सिंधी भाषी में मिलती है। विस्थापन के बाद सिंधियों की पहली जरूरत थी अपना पैर जमाना। इस प्रारंभिक समस्या से काफी कुछ मुक्ति पाने के बाद सिंधी युवा परोपकार के कामों में लगातार आ रहे हैं। अब संस्थाओं का गठन केवल स्वभाषियों के विकास ही नहीं, बल्कि समस्त मानव समाजसेवा के लिए होने लगा है। विश्व इतिहास में यह एकमात्र सभ्यता ऐसी है, जो विस्थापन पश्चात अल्प समय में ही अपनी भाषा, भूषा, भोजन और भजन को कायम रख सकी है।

मन के जीते जीत सदा

(मानव धर्म शृंखला का द्वितीय (2) पुष्प)

इतनी पसलियाँ, इतनी हड्डियाँ, इतना हमारे शरीर का रक्त है, इतनी माँसपेशियाँ हैं, इतना हमारे शरीर का वजन है, इतना 60 प्रतिशत नीर अर्थात जल है, परन्तु मन कहाँ है ?बुद्धि कैसी है ?प्रज्ञा कैसी है ?क्या आपने बड़ों का सम्मान किया ?क्या छोटों से प्यार किया ? क्या मीठी वाणी बोली ?

आज ही मैं पढ़ रहा था 'अवचेतन मन की शक्ति'। कोई पूछे कितने मन होते हैं ? चेतन मन जब मैं बोल रहा हूँ, आप सुन रहे हैं, मैं हंस रहा हूँ, मैं हाथ हिला रहा हूँ, ये मेरा चेतन मन है लेकिन अवचेतन मन इससे 30 हजार गुणा ज्यादा शक्तिशाली है। ध्यान से , प्रज्ञा भाव से, अनुशासन से, प्यार से, मोहब्बत से, स्नेह से , करूणा से , दया से, इन्द्रिय निग्रह से, क्षमा से, दान से, विद्या से अपने अवचेतन मन को जगा लें। बोलिये अवचेतन मन की जय।

रक्त कणिका देह में तीन तरह की होय।
लाल, श्वेत और प्लेटिलेट है, वैद्य बतावे सोय।।

कोई पूछे या नहीं पूछे, अभी मैंने थोड़ी देर पहले कहा – पूछे तो बता देना, नहीं पूछे तो भी जानकारी रहे। मेरे ठाकुर ने मेरे देह – देवालय में, साढ़े तीन हाथ की काया में जो 6 से 7 लीटर रक्त दिया है, तीन तरह की रक्त कणिकाएं हैं। अँखों से तो दिखाई भी नहीं देती है महाराज। इतना सा रक्त लेते हैं तो हजार तरह के टेस्ट हो जाते हैं। आपका लिपिड प्रोफाइल केसा है ? अच्छा वाला कोलस्ट्रॉल 40 है, ठीक है, थोड़ा बढ़ाईये। LDL, VLDL खराब कोलस्ट्रॉल को घटाईये। ये ट्राइग्लिसेराइड 150 से ज्यादा नहीं रहना चाहिये। ये यूरिक एसिड 7.2 से ज्यादा क्यों हो गया ?Rh फेक्टर रियूमेटॉइड आर्थराईटिस तो नहीं हो गया। 10– 11 रहे तो ठीक है, 15 तो ज्यादा है। ये गणित का हिसाब तो किताबों में मिल जायेगा। आज दिन तक दुनिया भर के वैज्ञानिकों द्वारा 36 साल से अरबों रूपये खर्च हो गये लेबोरेट्री में कि मनुष्य का रक्त नया बन जावे, प्रयोगशाला में बन जावे। नहीं बनता, प्रयोगशाला में रक्त नहीं बनता । ऐसा रक्त जो भगवान ने बनाया है, लाल रक्त कणिकाएं , सफेद रक्त कणिकाएं । क्या काम करती हैं ?सफेद रक्त कणिकाएं बाहरी दुश्मानों से रक्षा करती हैं। कभी मान लो घाव हो गया तो सफेद रक्त कणिकाएं चारों तरफ से इकट्ठी होकर उन दुशमनों से मुकाबला करती हैं, शरीर को बचाती हैं। हमारी रक्षक हैं सफेद रक्त कणिकाएं।

कभी – कभी आपने देखा होगा कि घाव हो जाता है और घाव भरता नहीं है। आपके कीटाणु आ गए बाहर से , पट्टी अच्छी नहीं की। देखो घाव भरने का काम तो शरीर ही करता है, पर एंटिबायोटिक हुआ, मरहम हुआ । पट्टी क्यों लगाते हैं कि बाहर के कीटाणुओं से रक्षा हो जाये। कभी देखते है कि घाव में मवाद ज्यादा आ गया, यह सफेद – सफेद होता है। करोड़ों सफेद रक्त कणिकाओं ने दुश्मानों का मुकाबला किया पर हमारी बेवकूफी से, मेरी अपनी बेवकूफी से , मैंने शरीर को स्वच्छ नहीं रखा, मैंने धर्म का पालन नहीं किया। मेरे शरीर में गंदगी आ गयी, बाहर के कीटाणु आ गये और उन कीटाणुओं ने ऐसा हमला किया कि मेरे शरीर की सफेद रक्त कणिकाएं मुकाबला करते हुए हार गयी और मेरे घाव में मवाद हो गया। कहते हैं, ये मवाद हो गया, अरे इसके लिये अब इन्जेक्शन लगाने पड़ेंगे। कहाँ गलती कर गए। तीन तरह की रक्त कणिकाएं, सफेद रक्त कणिकाएं जो शरीर की रक्षा करती हैं, लाल रक्त कणिकाएं जो हमारे शरीर को पोषण देती है, हमें ताकत देती हैं।

क्रमशः

सत्संग
चैनल पर सीधा प्रसारण
सादर आमंत्रण
अपंग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध, वंचितजनों एवं विमन्दितों की सेवा में सतत् सेवारत
नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर
सहायतार्थ
श्रीमद् भागवत कथा
आयोजक
भागवत कथा रसिक सत्संग मण्डल, गंजबासौदा
दिनांक एवं समय
7 से 13 अप्रेल 2016
दोपहर 3 बजे से सांय 6.30 बजे तक
स्थान :काशी गार्डन महाराणाप्रताप चौक,
न्यू बस स्टैण्ड बरेठ रोड, गंजबासौदा, जिला- विदिशा (म.प्र.)
कथा व्यास: पुज्य श्री प्रमेहानन्द जी महाराज
कैलाश 'मानव'
संस्थापक चैयरमेन
नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर
व्यास पीठ पर विराजमान होकर अपने मुखारविन्द से ओजस्वी रसमयी मधुरवाणी द्वारा संगीतमय कथा का श्रवणपान करायेंगे। आपश्री से अनुरोध है कि सपरिवार ईष्ट मित्रों सहित पधारकर श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण लाभ उठावें।
स्थानीय सम्पर्क सूत्र: 9893804333, 9098995883
संस्थान सम्पर्क सूत्र : 0294-6622222, 9649499999
कथा व्यास
पूज्य प्रमेहानन्द जी
महाराज
प्रशान्त अग्रवाल
अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष
नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर
:: 'नि:शक्तजन' की सेवा-सहयोग के प्रति समर्पित ::
कैलाश ''मानव''
मैनेजिंग ट्रस्टी एवं संस्थापक
नारायण सेवा संस्थान
कमला देवी
कोषाध्यक्ष
नारायण सेवा संस्थान
प्रशान्त अग्रवाल
अध्यक्ष
नारायण सेवा संस्थान
वन्दना
निदेशक
नारायण सेवा संस्थान
जगदीश आर्य
ट्रस्टी एवं निदेशक
नारायण सेवा संस्थान
देवेन्द्र चौबीसा
ट्रस्टी एवं निदेशक
नारायण सेवा संस्थान
भक्ति एवं सेवा के महायज्ञ में एक आहुति आपकी भी
कृपया सपरिवार अवश्य पधारें ।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक–मोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा नगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, लिण नगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, लिण नगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com